वर्ष-१३ अंक-११
२७ जुलाई २०१७

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०.०० रु.

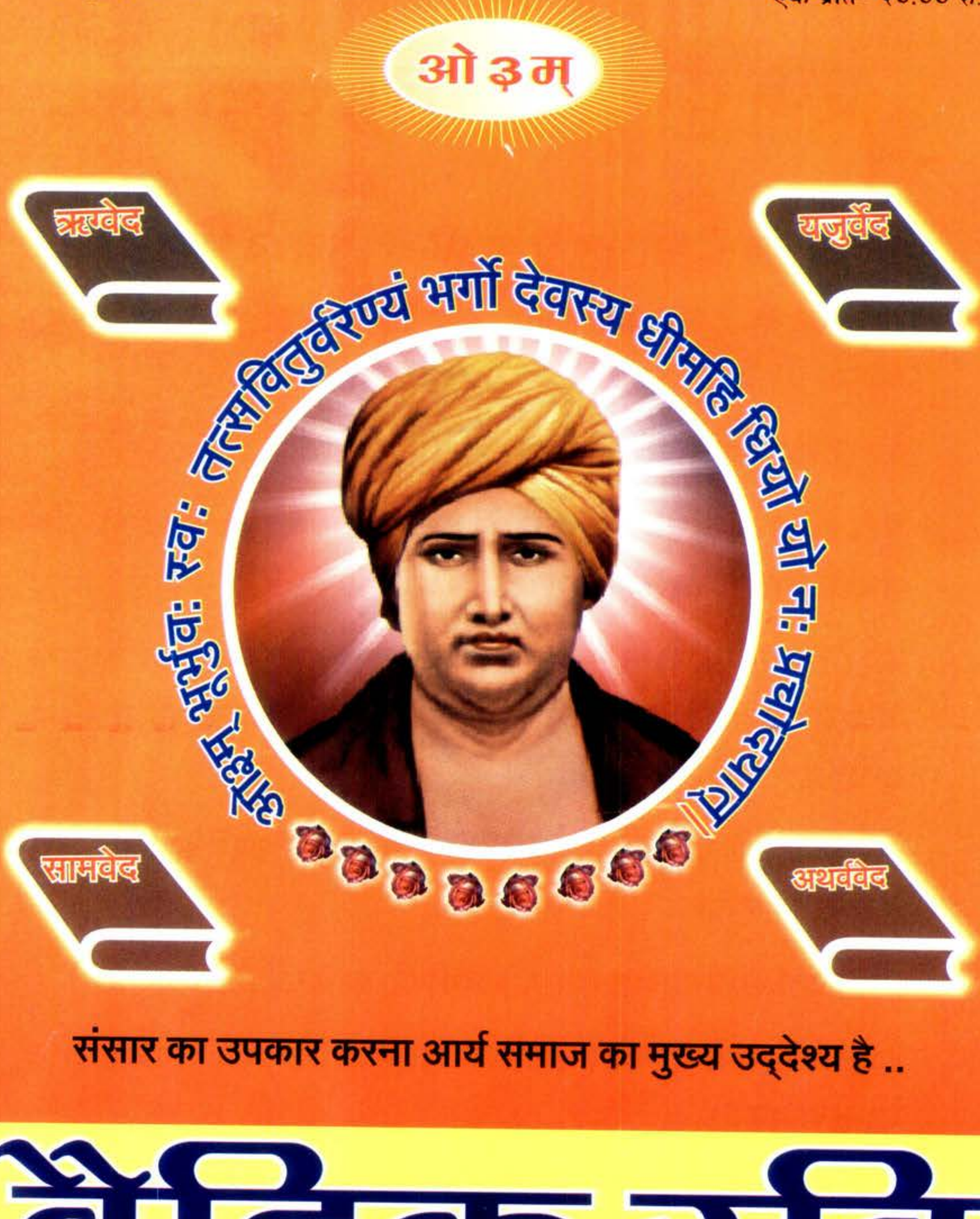

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

※ एक दृष्टि में आर्य समाज ※

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१३ अंक-११

२७ जुलाई २०१७
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३११६
विक्रम संवत् २०७४
दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
१.	भारतीय मुस्लिम समाज और देश	४
२.	आत्मज्ञान	६
३.	महर्षि दयानन्द बोले	७
४.	धर्म से दूर कौन	८
५.	आत्मा ही ब्रह्म को जान सकती है	९
६.	जिन्दगी	१०
७.	यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म	१२
८.	कहाँ खो गया	१३
९.	आर्य समाज के गौरव : भाई परमानन्द	१४
१०.	वैज्ञानिक पर्यावरण की समस्या का हल गाय	१६
११.	जीव अमर है तो हत्या अथवा आत्महत्या	१७
१२.	वेद सुधा	२१
१३.	वैदिक संस्कारों से प्रवेश	२३
१४.	अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा	२४
१५.	महू, इंदौर, उज्जैन, रतलाम, भोपाल में यज्ञ	२५
१६.	प्रचार कार्यक्रम	२६

अगस्त माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

■ डॉ. मैथिलीशरण गुप्त जयंती	३
■ रक्षाबंधन, श्रावणी उपाकर्म	७
■ अंग्रेजों भारत छोड़ो दिवस	९
■ खुदीराम बोस, शहीद दिवस	११
■ बलदाऊ जयंती, दुर्गादास राठौर जयंती, लैक्टहैण्डर डे	१३
■ स्वतंत्रता दिवस, योगी अरविंद जयंती, कृष्ण जन्माष्टमी	१५
■ रानी अवंतीबाई, लोधी जयंती	१६
■ मदनलाल धींगरा, शहीद दिवस	१७
■ राजीव गांधी जयंती, सद्भावनादिवस, देवी अहिल्याबाई होल्कर पुण्यतिथि	२०
■ गुरू रामदास पुण्यतिथि	२४
■ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जयंती	२६
■ दधीचि जयंती, राष्ट्रीय खेल दिवस	२९

सम्पादकीय :

भारतीय मुस्लिम समाज और देश !

नैतिकता का यह मानना है कि किसी भी व्यक्ति का सर्वोच्च धर्म राष्ट्र धर्म होता है। राष्ट्रीय धर्म को सर्वोपरि मानकर उसके लिए त्याग तपस्या या बलिदान करने वाले किसी जाति सम्प्रदाय, मजहब तक अपना स्थान नहीं बनाते, अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र उनके प्रति नत्मस्तक व कृतज्ञ होता है। स्वतन्त्रता की लड़ाई में भारत माता के वीर सपूत अश्फाक उल्लाह खॉ, हो चाहे परमवीर चक्र से नवाजे अमर शहीद अब्दुल हमीद हों, अथवा हाल ही में काश्मीर में शहीद हुए डी.एस.पी. आयूब पण्डित हों। इन सबने सम्मान उन्होंने अपनी जाति या मजहब के नाम पर नहीं पाया किन्तु अपने राष्ट्रीय धर्म को सर्वोपरि मानते हुए अपनी कुर्बानियां दी हैं, इसलिए पूरा देश आहत होता है, नत्मस्तक है। यह भी संभव था यदि जाति अथवा सम्प्रदाय के लिए बलिदान होता तो एक वर्ग विशेष तक सीमित रहता और इतना सम्मान नहीं पाते।

विगत कुछ दिनों से भारत की आंतरिक शक्ति और सुरक्षा को इसी देश के कुछ नागरिकों से खतरा हो गया है। उनके दु प्रयासों को रोकने में बड़ी शक्ति सेना, सी आर पी और सुरक्षा बल, की लग रही है। इस आग को और बढ़ाने में पड़ोसी राष्ट्र पूरी मदद कर रहा है। हर संभव प्रयत्नशील है, इस देश की आन्तरिक स्थिति को बिगाड़ने के लिए राष्ट्रीय दुश्मनों के हाथों इसी देश के किशोर व नवयुवक अपने ही देश में पाकिस्तान की जय–जयकार कर रहे हैं, आतंकवादियों, घुसपैठियों के विरूद्ध की जा रही कार्यवाही में वे बाधक बन रहे हैं। पत्थर, सेना व सुरक्षा बलों पर फेंक रहे हैं। आतंकवाद को रोकने में मदद करने के स्थान पर उनका साथ दे रहे हैं। देश की गोपनियता भंग कर रहे हैं। सीमा पार से घुसपैठियों का देश में प्रवेश करने में सहयोग, सुरक्षा और आश्रय दे रहे हैं। गालिब का शेर है – **गैरों से तमन्नाये क्या करना, अपने वाले ही मिट्टी में मिला देते हैं** या यूँ कहें **घर को आग लग रही घर के चिराग से।**

देश के अनेक सपूत इस राष्ट्र विरोधी गतिविधि को रोकने में अपने प्राण गवां चुके हैं। मजहबी कट्टरता का नंगा नाच पूरे क्षेत्र में व देश के कुछ अन्य भागों में हो रहा है।

यह सब कौन कर रहा है ? किस जाति सम्प्रदाय के व्यक्तियों का सहयोग इन्हें प्राप्त है ? कौन देश के खूंखार आतंकियों को अपना रहनुमा मान रहे हैं ? कौन इस देश से कश्मीर को अलग कर पाकिस्तान को सौंपना चाहता है ? कौन संसार के स्वर्ग कश्मीर को नर्क बना रहा है ?

ऐसे अनेक प्रश्नों का उत्तर टी.वी. चैनल, समाचार पत्रों, वाट्स अप, फेस बुक, यू ट्यूब द्वारा करोड़ों व्यक्तियों को मिलता है, और उनके सामने **इस्लाम का चेहरा खड़ा हो जाता है,** क्योंकि तमाम ये राष्ट्रद्रोही व मजहबी उन्माद करने वाले अपने को इस्लाम के अनुयायी बताते हैं। स्वाभाविक है जिस समुदाय के व्यक्तियों द्वारा यह जघन्य आपराधिक कार्य कर देश की जन धन, शान्ति व सुरक्षा को नष्ट किया जा रहा है वे इस्लाम के मानने वालों में से ही हैं। इस प्रकार आम व्यक्ति की इस्लाम के प्रति क्या प्रतिक्रिया होगी, भावना होगी यह आप भलि भांति समझ सकते हैं। कम से कम अच्छी तो नहीं होगी यह सत्य है।

किन्तु यहां एक प्रश्न उठता है, क्या इस्लाम के सभी अनुयायी और प्रत्येक मुसलमान इस असंवैधानिक और राष्ट्र घाती कार्य में लिप्त हैं ? क्या हर मुसलमान को कश्मीर की परिस्थिति के लिए दो ी माना जावें ?

नहीं प्रत्येक मुसलमान न तो ऐसा चाहता है और न ही उसका इन उग्रवादी, आतंकवादी अलगाववादी कार्यों में कोई सहयोग है या रूची है। देश के मुसलमानों की संख्या का बहुत बड़ा तपका इसे गलत मानता है। लाखों मुसलमान इस राष्ट्र को अपना मादरे वतन, जन्नत मानते है। वह इस राष्ट्र से अच्छा जीवन किसी अन्य इस्लामिक कन्ट्री में नहीं मानते हैं वे वहां की अपेक्षा यहां बहुत अपने को अधिक सुरक्षित व सुखी मानते है। इसलिए हर मुसलमान इसके लिए दोषी नहीं है। किन्तु यह भी सत्य है कि इन सारी देश विरोधी गतिविधियों में लिप्त पाकिस्तान के सहयोगी, हिंसा, लूटमार करने वाले अलगाववादी, उग्रवादी, आतंकवादी सभी मुस्लिम सम्प्रदाय के ही है ?

कुछ समय पहले खालिस्तान की मांग उठी थी, कुछ सिख्ख पंथ के अनुयायी इसे बहुत बड़ा रूप देने के लिए हिंसा, मार काट करने में लगे थे। पंजाब खाली करवाने में जबरन अपनी विचारधारा मनवाने में लगे थे। पवित्र पूजा स्थलों में भी दूषित व हिंसात्मक वातावरण बन रहा था। श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या भी इसी सम्प्रदाय के नवयुवकों द्वारा की गई थी। इस कारण पूरे देश में सिख्ख समुदाय के प्रति एक आक्रोश और नफरत सी फैल गई थी। जबकि सारे सिख्ख इस प्रकार के कार्यों के समर्थक नहीं थे, किन्तु फिर भी नफरत व शंका के घेरे में लगभग थे। क्योंकि जो साफ सुथरे राष्ट्र प्रेमी इनसे अलग थे किन्तु वे चुप रहे, उन्होंने अपनों का खुलकर विरोध नहीं किया था।

आज वही स्थिति तेजी से पुनः देश में फैल रही है। सिरफिरे, भ्रमित, नासमझ, चन्द मुसलमानों के अनैतिक कार्यों को मुस्लिम समुदाय की ओर से कोई रोकने के लिए कठोर विरोध नहीं हो रहा। जबकि लाखों की संख्या में इस देश से प्रेम व सद्भाव रखने वाले देश के हितैषी मुसलमान विद्यमान हैं, किन्तु वे मौन हैं।

कौम बदनाम हो रही है, इस्लाम के प्रति एक अलग सी विचारधारा बनती जा रही है जिससे देश व संस्कृति का भाव जुड़ा है। चुप रहना इस्लाम के लिए अपनी गरिमा को क्षति पहुंचा रहा है। यदि यही चलता रहा तो एक राष्ट्रीय विचारधारा वाले या सनातन धर्मियों के व इस्लाम के मध्य यह नफरत की खाई और बढ़ती जावेगी। इसलिए उन तमाम मुस्लिम सम्प्रदाय के शान्तिप्रिय, राष्ट्र हितैषी, मानवता की रक्षा करने का विचार रखने वाले तथा साम्प्रदायिक कटुता की भावना से उपर इस्लाम के नुमायिन्दों से मेरा आग्रह है कि राष्ट्रहित में देश में हो रही अलगाववादी, आतंकवादी, पाकिस्तान परस्त विचारधारा का खुलकर पूरी ताकत के साथ घोर विरोध करना चाहिए। यदि देश हम सबका है तो फिर देश को हो रही क्षति में हम मौन क्यों रहें ? आज मौन रहना इन अनैतिक कार्यों को एक मौन सहयोग की श्रेणी में लाकर खड़ा कर रहा है, इसे अविलम्ब बदलने की आवश्यकता है। मौन आपके सत्य को नष्टकर देता है, कहा गया **"मौनं सत्यं विनष्यति"**।

आत्मज्ञान

0 आत्म ज्ञान सबसे बड़ा ज्ञान है। — **महाभारत**

0 केवल आत्म ज्ञान ही ऐसा है जो हमें सब जरूरतों से परे कर सकता है।

— **स्वामी रामतीर्थ**

0 जैसे स्वप्न में काटे गए सिर का दुःख बिना जागे दूर नहीं होता, इसी प्रकार इस संसार का दुःख बिना आत्म ज्ञान हुए दूर नहीं होता। — **स्वामी भजनानन्द**

0 उस आत्मा को ही जान लेने पर मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता। वेद से उत्पन्न आत्म ज्ञान संसार के दुःख को हरने वाला है और मोक्ष का कारण कहा गया है।

— **शंकराचार्य**

0 आत्म ज्ञान शेष सभी विज्ञानों का विज्ञान है। — **प्लेटो**

0 जिसने अपने – आपको समझ लिया, वह औरों को समझाने नहीं जाएगा।

— **धम्मपद**

0 हमें अपनी आत्मा का ज्ञान चरित्र से ही मिल सकता है। — **महात्मा गांधी**

महर्षि दयानन्द बोले

अतिथि : जो पूर्ण विद्वान, परोपकारी, जितेन्द्रिय, धार्मिक, सत्यवादी, छल–कपटरहित, नित्य भ्रमण करने वाले मनुष्य होते हैं, उनको अतिथि कहते हैं।

– पंचमहायज्ञविधिः

आचार्य : "आचार्य" उसे कहते हैं, जो सांग–उपांग वेदों के शब्द, अर्थ, संबंध और क्रिया का जाननेहारा, छल–कपटरहित, अतिप्रेम से सबको विद्या का दाता, परोपकारी, तन–मन और धन से सबका सुख बढ़ाने में तत्पर, महाशय, पक्षपात किसी का न करे, सत्योपदेष्टा, सबका हितैषी, धर्मात्मा और जितेन्द्रिय होवे।

– संस्कारविधिः, उपनयनप्रकरणम

आप्त : वे ही आप्त जन हैं, जो आत्मा के तुल्य अन्यों का भी सुख चाहते हैं। उन्हीं के संग से विद्या की प्राप्ति, अविद्या की हानि, धन का लाभ तथा दरिद्रता का नाश होता है।

जो छलादि दोषरहित, धर्मात्मा, विद्वान, सत्योपदेष्टा, सब पर कृपा दृष्टि से वर्तमान होकर, अविद्यान्धकार का नाश करके अज्ञानी लोगों के आत्माओं में विद्यारूप सूर्य का प्रकाश सदा करें, उसको 'आप्त' कहते हैं।

– आर्योद्‌देश्यरत्नमाला

आलस्य : जो आलस्ययुक्त जन पुरूषार्थ नहीं करते, वे अभीष्ट सिद्धि को प्राप्त नहीं होते।

किसी को निकम्मा कभी न रहना और न रखना चाहिए।

– व्यवहारभानुः

आर्य समाज : इसलिए जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्‌देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ नहीं लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थो से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें, क्योंकि जैसा आर्य समाज आर्यवर्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता।

– सत्यार्थ प्रकाश एकादशसमुल्लास

धर्म से दूर कौन ?

धर्म मानव जीवन को अलंकृत करने वाला एक अनमोल गहना है, जिसको धारण करके मानव जीवन की सुन्दरता बढ़ जाती है और इस धर्म रूपी गहनें के त्याग से जीवन कुरूप हो जाता है।

यहां एक बात और ध्यान देने योग्य है, धार्मिक दिखना और धार्मिक होना इन दोनों में बड़ा अन्तर है। प्रायः समाज का बहुत बड़ा भाग धार्मिक दिखता है, परन्तु वास्तव में धार्मिक है नहीं। यदि वास्तव में समाज का बड़ा भाग धार्मिक हो जाये तो वर्तमान कष्टदायक स्थिति से समाज मुक्ति पा जाये। क्योंकि धर्म तो सुख, शान्ति, समृद्धि और संगठन का देने वाला है। किन्तु आज विपरीत स्थिति क्यों है ? इसका मुख्य कारण ही यह है कि समाज के जीवन में धर्म का आडम्बर ज्यादा है और व्यवहार कम है। धर्म का पालना और मानना धर्म के बाहरी दिखावे को महत्व देकर हो रहा है। कपड़े, दाड़ी, तिलक, कण्ठी, नंगे पैर चलना, धार्मिक चित्रों से मकान, दुकान सजाना, ये बाहरी लक्षण को ही धर्म मान लिया है। इसलिए धर्म के अनुसार आचरण गौण हो गया है।

धर्म से मनुष्य दूर क्यों रहता है, इसका कारण महात्मा विदुर जी ने धृतराष्ट्र को दुर्योधन के व्यवहार से व्यथित होकर बताया। उनके अनुसार 10 कारणों (आदतों) से मनुष्य धर्म से दूर रहता है। ये है –

मत्तः, प्रमत्तोन्मत्तः क्रुद्धो श्रान्तः बुभुक्षितः,
त्वरमाणश्च लुब्धश्च भीतः कामी च ते दश,
ये ते धर्मं न जानन्ति, धृतराष्ट्र निबोधतान्।

अर्थात – नषेड़ी, पागल, उन्मुक्त, क्रोधी, थका हुआ, भूखा, जल्दबाज, लोभी, डरा हुआ और भोग विलास में ही जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति इनके रहते धार्मिक नहीं हो सकता।

निष्चित ही उपरोक्त मानवीय दोष धर्म से विमुख करने का एक प्रमुख कारण है, प्रकाष और अन्धेरा एक साथ नहीं रह सकते, उसी प्रकार उपरोक्त आदतों से ग्रस्त व्यक्ति धार्मिक नहीं हो सकता। क्योंकि धर्म की मान्यता उपरोक्त बताये 10 लक्षणों के विपरीत है।

नीति कहती है इसलिए धर्म जिज्ञासू उपरोक्त 10 बातों का परित्याग करके धर्म को आत्मसात करें।

बोध कथा

आत्मा ही ब्रह्म को जान सकती है

केन उपनिषद् में एक बड़ी सुन्दर कथा ब्रह्म को पाने के विषय में आती है। ब्रह्म ने अग्नि, वायु, आत्मा इत्यादि देवताओं का मान बढ़ाने के लिए उन्हें विजय प्राप्त करा दी। इस विजय को पाकर ये देवता अभिमान में आ गये कि संसार में सब शक्ति उन्हीं की है।

यह जानकर ब्रह्म प्रकट हुआ और यक्ष के रूप में सामने आया। देवताओं ने कहा – यह कौन है ? तब अग्नि आगे बढ़ी। यक्ष ने पूछा – तू कौन है और तेरी शक्ति क्या है ?

अग्नि ने कहा – मैं जातवेदा अग्नि हूं और पृथ्वी पर जो कुछ है, सबको जला सकती हूं।

यक्ष ने एक तिनका फेंक कर कहा – इसे जलाओ !

अग्नि पूरे बल के साथ आगे बढ़ी, किन्तु तिनके को न जला सकी। असफल हो अग्नि लौट आई और कहा – मैं नहीं जान सकी, यह यक्ष कौन है ?

तब वायु को कहा गया – तुम पहचानों यह कौन है ?

वायु दौड़ा गया और यक्ष से कहने लगा – मैं वायु हूं और सबकुछ उड़ा सकता हूं।

यक्ष उसके सामने तिनका रखकर कहा – इसे उड़ाओ !

वायु ने अपनी पूरी शक्ति लगाई, किन्तु वह उसे उड़ा न सका। वायु ने लौटकर कहा – मैं इस यक्ष को जान नहीं सका।

तब इन्द्र (आत्मा) को आज्ञा हुई कि तुम जाओ और पता लगाओ कि यह यक्ष कौन है ?

इन्द्र आगे बढ़ा तो क्या देखता है कि वह यक्ष लोप हो गया है। अभी वह आश्चर्य में खड़ा था कि आकाश में बहुत शोभा–युक्त सुनहरी आभूषण से अलंकृत उमा नाम की एक स्त्री उसके सामने आई। इन्द्र ने उससे पूछा – यह यक्ष कौन है?

उमादेवी बोली – यह ब्रह्म है और इसी की महिमा से तुम देवता महिमा वाले हो।

इस कथा में ब्रह्म की पहचान एक स्त्री ने कराई है और बात भी सच। शिव का पता सिवाय उमा के और कौन दे सकता है ? इस कथा में यह बताया गया है कि जड़ देवता, अग्नि, वायु या मनुष्य की इन्द्रियां ब्रह्म को सर्वथा नहीं जान सकतीं, उसे केवल इन्द्र अर्थात् आत्मा ही जान सकता है और वह भी उमादेवी अर्थात् बुद्धि की सहायता से।

जिन्दगी

जिन्दगी का बड़ा अजीब हाल है,
हर पल उठता इस पर सवाल है।
जिन्दगी के रंग बड़े निराले हैं,
कहीं अमृत तो कहीं जहर के प्याले हैं।

गिरना, उठना फिर चलना,
जिन्दगी की निशानी है।
हर कदम पर बदलाव,
कहीं खुशी तो कहीं परेशानी है।

कभी समतल सपाट जमीन तो कहीं,
ऊंच–नींच पहाड़ी सी बनी है।
कहीं विरान जंगल तो,
कहीं घनघोर जंगलों सी घनी है।

कहीं कांटें ही कांटें हैं,
तो कहीं फूल खिलते हैं।
कहीं जनम–जनम की दूरी,
तो कहीं बिछड़े हुए मिलते हैं।

कभी चिलचिलाती मांध सी धूप भी है,
तो कहीं सावन सी हरियाली ।
कहीं चट्टानी रास्ता पड़ता है
तो कहीं पर जगह है खाली ।।

कभी सूखा जिन्दगी से खेलता,
तो कहीं कहर होता पानी का।
कहीं बुढ़ापा बना अभिशॉप,
कहीं दुःख जवानी का ।।

पर ये सब जीवन की धूप–छांव है,
जो आती और जाती है।
कभी अपार खुशी मिली,
तो कभी वो तरसाती है।

पर हर हाल में जिन्दगी का,
अस्तित्व कायम रहता है।
कमजोर न समझ इनसे,
नाहक डरता है।

चलते रहना, बढ़ते रहना,
जिन्दगी का है दस्तूर।
जो बैठ गया थककर,
वो रहा मंजिल से दूर है।।

इसलिए हर हाल में जीवन जीना,
बाधाऐं कुचल बढ़ते रहना,
जीवन की सफलता है।
हौंसले बुलन्द हो जिसके,
उसे कौन रोक सकता है।।

– प्रकाश आर्य, महू

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म

स्वर्ग अर्थात सुख, शान्ति, स्वास्थ्य, दीर्घायु, विद्या, बल, बुद्धि, पूजा, धन, सम्पत्ति, यश, कीर्ति आदि की इच्छा करने वाले व्यक्ति को यज्ञ करना चाहिये। यज्ञ कुण्ड में डाली गयी घृत के एक बूंद से ही बहुत से परमाणु करोड़ में बनते हैं जो वायु मण्डल में फैलकर पर्यावरण को शुद्ध करते हैं एवं विषैली गैसों को नष्ट करते हैं। यज्ञ कुण्ड से निकलने वाला धुंआ ऊपर पहुंचकर ओजोन परत में बने हुए छिद्रों को बन्द करने में समर्थ होता है, जिसके कारण पराबैगनी किरणें जैसी हानिकारक किरणों के कारण धरती पर फैलने वाले कैंसर, चर्म रोग आदि अनेक बीमारियों से हमारा बचाव होता है। यज्ञ के धुंए से क्षय रोग, चेचक, हैजा आदि बीमारियों के विषाणु नष्ट होते हैं तथा केसर व चावल को मिलाकर हवन करने से प्लेग के कीटाणु भी नष्ट होते हैं, ये विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. डीलिट व फ्रांस के वैज्ञानिक ट्रिलबर्ट आदि की घोषणाएं हैं। यज्ञ कुण्ड में डाली गयी घी व सुगन्धि और रोग नाशक सामग्री बर्बाद नहीं होती, इसे समझाने के लिए आलंकारिक दृष्टान्त दिया जा रहा है –

एक यजमान ने यज्ञ किया व यज्ञ कुण्ड में घी व अन्य सामग्री की आहूति का दान किया, फलतः दान करके वह देवता कहलाया जबकि अग्नि देवता घी व सुगन्धि व रोगनाशक सामग्री को ग्रहण करने से लेणता बन गयी तब अग्नि कहती है कि यजमान घी व अन्य सामग्री की आहूति दान कर देवता बन गया तो मैं भी देवता हूं, मैं क्यों लेणता बनूं और उसने उस घी व सुगन्धि, सामग्री को वायु को दान कर दिया। वायु कहता है यजमान देवता, अग्नि देवता तो मैं क्यों लेवता बनूं मैं भी देवता बनूं, अतः उसने घी व सुगन्धि सामग्री को बादल, पर्जन्य को दान कर दिया। बादल ने सोचा यजमान, अग्नि, वायु सब देवता हैं तो मैं क्यों देवता नहीं और उसने उस घी व रोगनाशक व सुगन्धि सामग्री को जल को दान कर दिया। जल भी तो देवता है, उसने उस घी व सुगन्धि व रोग नाशक सामग्री धरती माता को दान कर दिया और इस प्रकार धरती में वृष्टि के द्वारा वह घृताहुति नीचे पहुंचाती है। उस घृत युक्त जल से पुनः गेहूं, चावल आदि अन्न उत्पन्न होते हैं और घांस भी उगती है। उस घांस को पुनः गाय खाती है और दूध देती है उसके दूध से पुनः घी बनाया जाता है। इस प्रकार यज्ञ कुण्ड में डाली गयी घृत की घूमते हुए पुनः घी में बदल जाती है। अतः घी का नष्ट होना मानना सर्वथा गलत है।

0 **अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः** – अथर्ववेद 9/10/14

यह यज्ञ ही सम्पूर्ण संसार की नाभि (केन्द्र) है।

0 **यज्ञो वै श्रेष्ठतमम् कर्म**

यज्ञ ही सब कार्यों में सर्वश्रेष्ठ कर्म है।

यज्ञमय जीवन ही हमारा श्रेष्ठ सुन्दर कर्म है।

– कैलाश काका पाटीदार
आर्य समाज, सुवासा

कहाँ खो गया............

कहाँ मनुष्य खो गया आज जमाने में ?
आ रही है मुश्किल जिसे ढूँढ़ पाने में।
ढूंढ़ते–ढूंढ़ते दुःखी हो गया,
अन्धेरे में सारा नगर खो गया।।

अविद्या का फैला चहुंओर अन्धकार,
अरे ! चलने वालों जरा रहना होशियार।
मोह का फन्दा कसे जा रहा है,
वासना का विषधर डसे जा रहा है।।

विषयों की आंधी ने सब कुछ उखाड़ा,
कामरूपी कीचड़ ने चेहरा बिगाड़ा।
मूर्खता पर अपनी हंसा जा रहा हूँ,
लालच की दलदल में फंसा जा रहा हूँ।।

तृष्णा की बिजली ने झटके जो मारे,
माया के बन्धन में जकड़े हैं सारे।
चलते–फिरते शरीरों को लोग कहते हैं मानव,
जानते नहीं इसमें भी तो छिपे हैं दानव।।

वेदों का सूरज जिस दिन फिर उगेगा,
तभी अविद्या का सारा अन्धेरा मिटेगा।
सच्चाई के जल की बरसात होगी,
जमीं पर जमी मैल तभी साफ होगी।।

योग ही सहारा देगा, रोग को मिटाने में,
तभी होगें सफल हम, मनुष्य ढूंढ़ पाने में।।

– **पं. सुरेश शास्त्री**
आर्य समाज, महू

आर्य समाज के गौरव : भाई परमानन्द

जिस समय अत्याचारी मुगल बादशाह औरंगजेब ने सिखों के नवें गुरू तेग बहादुर को निर्ममतापूर्वक दिल्ली में कत्ल करवाया था, उस समय उनके साथ पंजाब के एक ब्राह्मण मतिदास का शरीर आरे से चिरवाकर, उसे भी गुरू महाराज के साथ धर्म की वेदी पर बलिदान कर दिया था। जब दशम गुरू गोविन्दसिंह को इन बलिदानों के समाचार मिले, तब उन्होंने मतिदास के वंशजों को भाई कहकर पुकारा, क्योंकि गुरू तेग बहादुर के साथ एक सहोदर भाई की तरह मतिदास ने भी अपने प्राण न्यौछावर किये थे। तब से उस ब्राह्मण मतिदास के वंशज भाई के सम्बोधन से ही पुकारे जाने लगे। मुहियाल ब्राह्मणों के इसी पवित्र वंश में भाई परमानन्द का जन्म 1876 में हुआ। उनके पिता भाई ताराचन्द जेहलम जिले के कटियाला ग्राम के निवासी थे।

भाईजी की प्रारम्भिक शिक्षा अपने ग्राम में ही हुई। उसके बाद वे चकवाल के मिडिल स्कूल में भर्ती हुए। उनकी उच्च शिक्षा लाहौर में हुई। डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर से उन्होंने बी.ए. किया और कलकत्ता के प्रसीडेन्ट कॉलेज से इतिहास में एम. ए. किया।

भाई के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब उन्हें पूर्वी अफ्रिका में आर्य धर्म के प्रचारार्थ भेजे जाने का प्रस्ताव आया। सम्भवतः वे आर्य समाज के प्रथम प्रचारक थे, जो अफ्रिका महाद्वीप में बसे प्रवासी भारतीयों के अनुरोध पर वहां गए। 1906 में उनका यह प्रथम विदेश–प्रवास हुआ। मोम्बासा, नैरोबी, जोहान्सबर्ग, नेटाल आदि स्थानों में धर्म–प्रचार करने के उपरान्त वे डर्बन पहुंचे। उन दिनों महात्मा गांधी बैरिस्टर के रूप में, अफ्रिका में प्रवासी भारतीयों का हितचिन्तन करते हुए, उनके नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे थे। भाईजी ने महात्माजी से भेंट की। उनके सेवा भाव तथा समर्पणशील व्यक्तित्व से वे अत्यन्त प्रभावित हुए। गांधीजी से उनका मैत्री–भाव जीवन–पर्यन्त रहा।

1908 में भाई परमानन्द स्वदेश लौट आए। पहले की भांति वे डी.ए.वी. कॉलेज तथा आर्य समाज के कार्यों में लग गए। 1909 में वे दक्षिण भारत में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ निकले। विभिन्न स्थानों पर जाकर सामाजिक जागृति का शंखनाद किया।

22 फरवरी 1925 को भाईजी को "लाहौर षड़यन्त्र अभियोग" में बन्दी बना लिया गया। अभियोग का निर्णय करने के लिए एक विशेष न्यायिक ट्रिब्यूनल का गठन किया गया, जिसके दो अंग्रेज तथा एक भारतीय सदस्य थे। अनुमान तो यह था कि भाईजी को फॉसी का दण्ड दिया जाएगा, किन्तु ट्रिब्यूनल के भारतीय

सदस्य के आग्रह पर उन्हें अजन्म कारावास की सजा हुई। वे कालापानी भेज दिये गए। इस भीषण दण्ड को भोगते हुए उन्हें कैसी–कैसी अमानुषिक यातानाएं झेलनी पड़ी, इसका रोमांचक वर्णन स्वयं भाईजी ने अपनी आत्मकथा में किया है। महात्मा गांधी और भारत–भक्त एण्ड्रूज के प्रयत्नों से 1930 में उन्हें कालापानी से रिहा कर दिया गया। वर्षों बाद वे स्वदेश लौटे। उस समय देश में महात्मा गांधी द्वारा चलाए जाने वाले असहयोग आन्दोलन का जोर था। सरकारी स्कूलों और कॉलेजों का बहिष्कार किया जा रहा था। स्वदेशी भावना को प्रोत्साहन देने के लिए स्थन–स्थान पर राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित किये जा रहे थे।

लाहौर में जब महात्मा गांधी की प्रेरणा से नेशनल कॉलेज खोला गया तो भाई जी को इसका प्रिंसिपल पद दिया गया। अमर शहीद भगतसिंह ने भी इसी कॉलेज में भाईजी से देश भक्ति का पाठ पढ़ा था। असहयोग के साथ–साथ महात्मा गांधी ने खिलाफत की तहरीक का समर्थन कर, मुसलमानों का राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयोग लेने का प्रयास किया, किन्तु जब टर्की में कमाल पासा ने सत्ता संभाली और खिलाफत का सपना चूर–चूर हो गया, तो देश में साम्प्रदायिक दंगों की आग भड़क उठी।

उस समय मुस्लिम साम्प्रदायिकता के तूफान का मुकाबला करने के लिए, स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि तथा हिन्दू–संगठन पर बल दिया। लाला लाजपत राय तथा मदनमोहन मालवीय जैसे हिन्दू निष्ठावाले नेताओं ने "हिन्दू महासभा" को शक्तिशाली बनाने पर जोर दिया।

1931 में वे केन्द्रीय असेम्बली के लिए चुन लिये गए। 1934 में अजमेर में आयोजित हिन्दू महासभा के अधिवेशन के अध्यक्ष पद के लिए भाईजी को चुना गया। इस पद से अपना भाषण देते हुए उन्होंने देश की राजनैतिक परिस्थिति का लेखा–जोखा किया। हिन्दू महासभा को सुदृढ़ बनाने के लिए समस्त देश का भ्रमण किया। 1935 में महासभा की अध्यक्षता के लिए जब बर्मा के बौद्ध भिक्षु उत्तम को चुना गया, तो यह सिद्ध हो गया कि हिन्दू महासभा केवल उच्च वर्णों के हिन्दुओं का ही प्रतिनिधित्व नहीं करती, अपितु इसमें बौद्ध, जैन, सिख आदि उन सभी समुदायों का स्वागत है जो हिन्दू नाम को व्यापक अर्थ में स्वीकार करते हैं, तथा जिनकी आर्य संस्कृति में आस्था है।

1937 में जब वीर सावरकर को काला पानी से रिहाई मिली, तो उन्हें भी हिन्दू महासभा में आने के लिए कहा गया।

इस बीच देश की राजनैतिक स्थिति में अनेक परिवर्तन आए। अन्ततः 15 अगस्त को देश को अधूरी आजादी मिली। इस समय तक भाईजी भी शारीरिक और मानसिक दृष्टि से बहुत क्षीण और दुर्बल हो गए थे। 8 दिसम्बर 1947 को उनका निधन हो गया। उन्होंने अविभाजित भारत की स्वतन्त्रता की आशा की थी, जो सफल नहीं हुई।

वैज्ञानिक पर्यावरण की समस्या का हल गाय

देश में औद्योगिक विकास काफी हो रहा है। जिससे देश में पर्यावरण की समस्या खड़ी हुई है। पर्यावरण की शुद्धि एवं कृषि विकास तथा पशु पालन पर विशेष ध्यान देना होगा। इसी कारण से गौधन सुरक्षा अति आवश्यक है। गाय भारत की समृद्धि का कारण है, गाय से सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था जुड़ी हुई है। गाय केवल मांस की गठरी नहीं है। परन्तु गाय से दूध, दूध से बुद्धि शक्ति, शरीर की पुष्टि, तेज, सुन्दरता, मानवता के लिए सद्विचार और आत्मबल मिलता है। गाय के मूत्र से कीटनाशक औषधियॉ और अनेक प्रकार के रोगों के लिए आयुर्वेदिक दवाईयॉ बनाई जाती हैं और किसानों की फसल के लिए कीटनाशक औषधियों से गाय का मूत्र अधिक लाभदायक है।

गाय के गोबर से खाद बनाये जाते हैं, जो रासायनिक खाद से अधिक लाभदायक है। गाय के गोबर में इतनी शक्ति है जो परमाणु बम के असर को कम कर सकती है।

गाय के घी से यज्ञ करने से पर्यावरण की अशुद्ध हवा और प्रदूषण दूर होते हैं। गाय का घी खाने से शक्ति, वीर्य, बुद्धि का विकास होता है। गाय से बैल प्राप्त होते हैं जो परिवहन के कार्य में आते हैं और गाय के मूत्र से अनेक प्रकार की वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।

विश्वविख्यात वैज्ञानिक आइन्स्टाइन ने गाय के महत्व के विषय में कहा था कि अमरिका की जमीन की पैदावार 400 वर्षों में समाप्त होने को है। जबकि भारत में गाय और बैल के आधार पर खेती 10,000 वर्षों से ठीक प्रकार से हो रही है। पैदावार यथावत है। गौ पालन के महत्व को भारत ने करोड़ों वर्षों से स्वीकार किया है परन्तु आधुनिक टेक्नॉलॉजी तथा यांत्रिकीकरण की दुनिया में शिरोमणि जापान जैसे देश को गौवंश का महत्व समझ में आ गया है। जापान में छोटे बड़े ट्रेक्टरों के जगह पर गाय और बैल का उपयोग हो रहा है।

महर्षि दयानन्द उवाच

प्रश्न – जब वेद पढ़ने का सामर्थ्य नहीं रहा तब स्मृति, जब स्मृति के पढ़ने की बुद्धि नहीं रही तब शास्त्र, जब शास्त्र पढ़ने का सामर्थ्य न रहा तब पुराण बनाए, केवल स्त्री और शूद्रों के लिए क्योंकि इनको वेद पढ़ने सुनने का अधिकार नहीं है।

उत्तर – यह बात मिथ्या है क्योंकि सामर्थ्य पढ़ने–पढ़ाने ही से होता है और वेद पढ़ने–सुनने का अधिकार सबको है। देखो ! गार्गी आदि स्त्रियॉ और छान्दोग्य में जनश्रुति शूद्रों ने भी वेद रैक्य मुनि के पास पढ़ा था और यजुर्वेद के 26 वें अध्याय के दूसरे मन्त्र में स्पष्ट लिखा है कि वेदों के पढ़ने और सुनने का अधिकार मनुष्य मात्र को है, पुनः जो ऐसे ऐसे मिथ्या ग्रंथ बता लोगो को सत्य ग्रंथों से विमुख कर जाल में फॅसा अपने प्रयोजन को साधते हैं, वे महापापी क्यों नहीं ?

जीव अमर है तो हत्या अथवा आत्म हत्या पाप या अपराध क्यों ?

– इन्द्रजित् देव

जीवन क्या है ? शरीर व आत्मा का संयुक्त होना तथा एक साथ रहना। मृत्यु क्या है ? शरीर व आत्मा का पृथक होना, वियोग होना। वियोग निम्नलिखित तीन प्रकार में से किसी एक प्रकार से होता है।

1. **मृत्यु** – बीमारी, जरावस्था अथवा दुर्घटना आदि के कारण शरीरान्त होता है तो उसे मृत्यु के नाम से अभिहित किया जाता है।

2. **हत्या** – जब किसी व्यक्ति का शरीरान्त कोई एक या अधिक व्यक्ति किसी घातक साधन से करते हैं तो वह हत्या कहलाता है।

3. **आत्महत्या** – जब कोई व्यक्ति दुःख, अवसाद, निराशा या असफलता की दशा में किसी साधन या क्रिया द्वारा अपना शरीरान्त स्वयं कर लेता है तो इसे आत्महत्या कहा जाता है।

किसी भी प्रकार से हो, शरीर व आत्मा का पृथक् होना कभी न कभी अनिवार्य है। उपर्युक्त प्रथम प्रकार का शरीर एवं आत्मा का वियोग या पृथक होना अपराध या पाप नहीं माना जाता, माना भी नहीं जाना चाहिए। स्वाभाविक मृत्यु होने पर थाने में रपट नहीं लिखाई जाती, क्योंकि स्वाभाविक मृत्यु में किसी का दोष नहीं है, परन्तु हत्या एवं आत्महत्या करने पर अपराध माना जाता है। हत्या करने वाले व्यक्ति के विरूद्ध तुरन्त थाने में मामला दर्ज किया जाता है। तब अपराधी को न्यायालय में प्रस्तुत किया जाता है तथा यथासम्भव शीघ्र न्यायाधीश निर्णय देकर अपराधी को उचित दण्ड देता है। आत्म हत्या करने का यत्न करने वाले व्यक्ति को यदि अपने उद्देश्य में सफलता मिल जाती है अर्थात् वह शरीर का त्याग करके चला जाता है तो मुकदमा बनता है, परन्तु किसके विरूद्ध किया जाए ? आत्महत्या करने वाला तो चला गया। उसके विरूद्ध कार्यवाही नहीं हो सकती। हत्या वाले मामले में स्थिति दूसरी होती है। जिसकी हत्या की गई है, वह तो निर्दोष था तथा अब रहा नहीं, परन्तु जिसने हत्या की, वह जीवित है। उस पर हत्या करने का अभियोग चलाया जाता है क्योंकि ऐसा करना पाप तो है ही, अपराध भी है।

पाप तथा अपराध में भारी भेद है। एक ही कार्य के दो नाम हैं। राजनैतिक संविधान के अनुसार जो कार्य गलत है, वह अपराध है परन्तु ईश्वरीय न्यायानुसार जो कार्य गलत है, उसे पाप कहा जाता है। हत्या अथवा आत्महत्या, ये दोनों राजनैतिक संविधानानुसार तथा ईश्वरीय व्यवस्थानुसार गलत कार्य हैं। अतः इन दोनों कार्यों के लिए हमने अपराध तथा पाप, इन दो शब्दों का प्रयोग किया है।

इस विषय में आगे विचार करने हेतु मुझे यह आवश्यक प्रतीत होता है कि आत्मा पर भी कुछ विचार किया जाए, क्योंकि किसी भी प्रकार से शरीरान्त हो, आत्मा का अन्त नहीं होता। न वह जलती है, न वह कटती है, न ही मरती है। हॉं, शरीरान्त अर्थात मृत्यु होने पर आत्मा को नया शरीर मिल जाता है।

आत्मा के विषय में ऋग्वेद (10/48/5) में कहा है – **"अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन"** अर्थात् मैं आत्मा हूँ, मैं ऐश्वर्यवान् हूँ। मैं कभी भी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता अर्थात् मृत्यु मुझे मार नहीं सकती। मेरे धन को कोई चुरा नहीं सकता। आत्मा का धन क्या है ? कर्मेन्द्रियॉं, ज्ञानेन्द्रियॉं, शरीर क अन्य अवयव, मन व बुद्धि आदि। यह धन आत्मा को बार–बार नए–नए शरीरों के माध्यम से पूर्वकृत कर्मानुसार मिलता रहता है, जब तक आत्मा को मोक्ष प्राप्त नहीं होता। इस धन पर प्रत्येक आत्मा का ईश्वरीय आरक्षण है। आत्मा मृत्यु को चुनौती देते हुए कहती है – ओ मृत्यु ! तू आई है, परन्तु याद रख। तू मेरा कुछ भी नहीं छीन सकती। एक जन्म के स्थूल शरीर को मुझसे पृथक कर सकती है। मुझे मार नहीं सकती। अधिकतम तू मेरा यह भौतिक शरीर नष्ट कर सकती है। मैंने पहले भी अनेक शरीरों का भोग किया है व आगामी जन्मों में भी करूँगी ही।

यजुर्वेद के 40 अध्याय में आत्मा व शरीर के विषय में स्वीकार है – **वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्** अर्थात् आत्मा अमर है। अमृत जो मरती नहीं, परन्तु शरीर अमर नहीं। इसका अंजाम, इसका परिणाम भस्म होने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। योगेश्वर कृष्ण ने इसी बात को गीता (2/23) में कहा है –

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूतः।।

अर्थात् आत्मा को शस्त्रों से काटा नहीं जा सकता, अग्नि से जलाया नहीं जा सकता। जल इसे गला नहीं सकता तथा वायु इसे सुखा नहीं सकती। इस संक्षिप्त विश्लेषण व वैदिक प्रमाणों से स्पष्ट है कि आत्मा अवध्य है अहननीय है, अमृत है, शाश्वत है। इस आधार पर स्वाभाविक प्रश्न उत्पन्न होता है कि हत्या या आत्महत्या करने वाले व्यक्ति को हेय, घृणा व उपेक्षा की दृष्टि से क्यों देखा जाता है ? उसे अपराधी व पापी क्यों माना जाता है ?

इस संबंध में शरीर एवं आत्मा के पारस्परिक सम्बन्ध को भी समझना आवश्यक है। आत्मा शरीर बिना निष्क्रिय है तथा कर्मों का फल भोगने में असमर्थ है। कार्य करने का साधन आत्मा को शरीर मिलता है – **शरीरमाद्यंखलु धर्मसाधनम्।** शरीर आत्मा को पिछले जन्मों कर्मों का फल भोगने व नये कर्म करने के लिए साधनरूप में ईश्वरीय न्याय व कर्मफल व्यवस्था से मिलता है।

भोगापवर्गार्थम् दृश्यम् अर्थात यह संसार (मनुष्य शरीर) भोग व अपवर्ग के लिए ही है। कर्म का कर्ता आत्मा व साधन रूप में शरीर है। आत्मा इतना अंकिचन व बेचारा है कि शरीर बिना अपने अस्तित्व का भान भी नहीं कर सकता। शरीर पाकर ही वह इच्छा, प्रयत्न, द्वेष, सुख–दुःख व ज्ञान का आभास करता है। जो 'न्याय दर्शन' में आत्मा के छः लक्षण अभिहित किए गए हैं। महर्षि गौतम ने इस दर्शन में कहा है– **''तदभावः सात्मक प्रदाहेऽपि मन्नित्यत्वात्''** अर्थात् आत्मा नित्य है। उसका वध नहीं किया जा सकता। अपितु उसके कार्य साधनों का नाश होता है। अतः पाप है **''न कार्याश्रयकर्तृवधात्''** अर्थात् आत्मा के भोग आदि के साधन देहादि संघात का वध हिंसारूप पातक है। शरीर बिना आत्मा साधनहीन हो जाता है। शरीर ईश्वर प्रदत्त है। ईश्वरीय न्याय–व्यवस्था में बाधा डालना पाप है। एक पिता अपने पुत्र को बाजार में भेजता है। उसे थैला थमाकर पिता कहता है – बाजार में जाओ। घूमो, फिरो व बाजार को देखो। जो वस्तु तुम्हें पसन्द आए व तुम्हें आवश्यक प्रतीत हो, वह वस्तु लेकर आओ। पुत्र बाजार में गया। घूमता–फिरता थोड़ा समय पुत्र बाजार को देखता रहा। तभी एक लुटेरा आकर उसका थैला छीनकर या चीर–फाड़ करके भाग गया। बताइए, यह अपराध माना जाएगा या नहीं? शरीर आत्मा का घर है। किसी के घर को तोड़ना पुण्य है क्या ? कृष्णजी ने गीता में शरीर को आत्मा का वस्त्र कहा है। किसी के वस्त्र फाड़ने वाले को अपराधी माना ही जाएगा। यही सामाजिक व राष्ट्रीय व्यवहार में होता है।

इस निबन्ध के प्रारम्भ में वर्णित स्वाभाविक मृत्यु होने पर शरीर के अवयव अर्थात् कार्य करने व फल भोगने के साधन निष्क्रिय व व्यर्थ हो जाते हैं। तब मृत शरीर को चिता में रखकर जला देते हैं। मृत देह को नष्ट कर देते हैं। तब यह कार्य पाप या अपराध नहीं माना जाता ? यह गंभीर रोचक तथा चिन्तनीय प्रश्न है। इसका सीधा सा उत्तर यह है कि जिस आत्मा के लिए शरीर बना था, वह आत्मा शरीर को ईश्वरीय व्यवस्था से त्यागकर चला गया है। उसे लौटकर मृत शरीर में आना नहीं। जो बचा पड़ा है, मृत शरीर उसका परिणाम/अंजाम भस्म होना है– **भस्मातं शरीरम्** (यजुर्वेद 40/15) अतः मृत शरीर को अग्नि की भेंट चढ़ा देना कर्तव्य है अन्यथा दुर्गन्ध फैलेगी। न्यायादर्शनकार महर्षि गौतम ने भी इस बात की पुष्टि की है – **''शरीरदाहे पातका भावात्।''** अब हम कुछ चर्चा राजनैतिक संविधानानुसार हत्या तथा आत्महत्या की करते हैं। इस दृष्टि से किसी की हत्या करना और स्वयं अपनी हत्या करना अपराध है क्योंकि व्यक्ति को खिंलाने, पिलाने, पढ़ाने, सिखाने व अन्य प्रकार से योग्य, सक्षम व समर्थ बनाने पर राष्ट्र के साधन, राष्ट्र का धन व्यय होता है। राष्ट्र का ज्ञान, विज्ञान, अन्न व जलादि व्यक्ति के शारीरिक, बौद्धिक व मानसिक निर्माण में खर्च होते हैं। प्रत्येक नागरिक स्वयं में

राष्ट्र की सम्पत्ति है। प्रत्येक नागरिक राष्ट्र का ऋणी है। राष्ट्र का उस पर अधिकार है। उसकी मनीषा, क्षमता, योग्यता के विकास में राष्ट्र के योगदान को सदैव स्मरण रखना चाहिए। यदि वह आत्महत्या करता है तो यह घोर अपराध है। वह राष्ट्र का ऋण चुकाए बिना चला गया तो ऋण कौन चुकाएगा ?

इसी प्रकार एक व्यक्ति आत्म हत्या करके राष्ट्र की सम्पत्ति को नष्ट करने का दण्डनीय अपराध ही करता है।

– साभार परोपकारी

गो मूत्र के सरलतम घरेलु औषधीय उपयोग

प्रतिदिन 50 मि.ली. भारतीय गाय का मूत्र सूती कपड़े की आठ परत कर छानकर प्रातः खाली पेट पियें। इस गोमूत्र के सेवन से एक घण्टे पहले और एक घण्टे बाद में कुछ खायें–पियें नहीं। इस प्रकार देशी गाय का मूत्र सेवन करने से पाईल्स, लकवा (पक्षघात), पथरी (मूत्र पित्त), दमा, सफेद दाग, टॉसिल्स, हार्ट अटैक (कोलेस्ट्रॉल), श्वेत प्रदर, अनियमित माहवारी, गठिया, डायबिटीज (मधुमेह), किडनी के रोग, रक्तचाप (ब्लड प्रेशर), सिरदर्द, टी. बी., कैंसर आदि रोग ठीक हो जाते हैं।

जलोदर : गोमूत्र 50 मिली और आधा ग्राम हरड़ (एरंड, तेल में भुनी हुई) रात्रि को गो दुग्ध से लेने से बवासीर रोग नष्ट हो जाता है।

पाण्डु (कामला में) : गोमूत्र 50 मिली. पुनर्नवा मूल का क्वाथ 100 मिली. दोनों मिलाकर प्रातः–सायं लें। शीघ्र लाभ होगा।

जुकाम में : गोमूत्र 50 मिली. प्रतिदिन पान करने से एवं गापालनस्य लेने से पुराना जुकाम ठीक हो जाता है।

उदरकृमि : गोमूत्र 50 मिली. 1 ग्राम अजवाइन चूर्ण के साथ प्रातःसायं सेवन करने से एक सप्ताह में कृमि नष्ट हो जाते हैं। ,

संधिवात में : (जोड़ों का दर्द व गठिया) महारास्नादि के क्वाथ के साथ गोमूत्र 50 मिली. प्रतिदिन सुबह–शाम सेवन करने से यह रोग ठीक हो जाता है।

दांत दर्द या पायरिया में : दांत व दाढ़ दर्द में गोमूत्र बहुत अच्छा कार्य करता है। जब दांत दर्द असहय हो जाए तो गोमूत्र का कुल्ला करें। इससे बड़ा चमत्कारी प्रभाव होता है। गोमूत्र से प्रतिदिन कुल्ला करने पर पायरिया रोग समाप्त हो जाता है।

चर्मरोग में : नीम, गिलोय क्वाथ के साथ दोनों समय गौमूत्र के साथ सेवन करने से रक्त दोष जन्य रोग नष्ट हो जाते हैं। जीरे को गोमूत्र के साथ बारीक पीसकर लेप करने व मालिश करने से चमड़ी सुवर्ण एवं रोग रहित हो जाती है।

वेद सुधा

ईश्वर को ही जानिये, अनन्त ज्ञान भण्डार।
एक प्रभु की भक्ति से, आनन्द मिले अपार।।

धर्मप्रेमी सज्जनों, इस वेद मन्त्र में उस ओ3म् नाम वाचक सच्चिदानन्द परमात्मा की महिमा का दिग्दर्शन कराया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के तीसरे नियम में वेद के स्वाध्याय को परम धर्म माना है। हम भी परम धर्म का निर्वहन करते हुए वेद मन्त्र का पाठ करके अर्थ का चिन्तन करते हैं।

ओ3म् शतधारमुत्समक्षीयमाणं विपश्चितं पितरं वक्त्वानाम्।
मेळिं मदन्तं पित्रोरूपस्थे तं रोदसी पिपृतं सत्यवाचम्।।

ऋ. 3/26/9

शतधारम् – सैकड़ों धाराओं वाले अर्थात् अनन्त ज्ञान, बल, सामर्थ्य वाले, **अक्षीयमाणम् उत्सम्** – कभी क्षीण न होने वाले स्त्रोत के समान, सदा एक रस रहने वाले, अपरिवर्तनशील, **विपश्चितम्** – महाज्ञानी, सकल ज्ञान के भण्डार, ज्ञान प्रदाता, वेद ज्ञान के स्वामी, **वक्त्वानाम्** – वक्ताओं के वक्ता, उपदेशकों के भी उपदेशक गुरूओं के भी गुरू, महर्षि पतंजलि जी ने भी योगदर्शन में कहा है – **"स एष पूर्वेषमपि गुरूः कालेनानवच्छेदात्"** अर्थात् वह परमात्मा पूर्वों का अर्थात् सृष्टि के आरम्भ के उपदेशकों, गुरूओं का भी गुरू है, सभी गुरू काल के गाल में चले जाते हैं, समय आने पर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं किन्तु यह परमात्मा कालातीत है, काल का भी काल है। अमर और अजर है, उसी की शरण, उसी की भक्ति, उस प्रभु की आज्ञा पालन करने से ही अमरत्व प्राप्त होता है। **पितरम्** – वही सब पिताओं का पिता है सबका पालक और रक्षा करने वाला है। **मेळिम्** – सबको मिलाने वाला सब पदार्थों को ज्ञान और नियम से संयुक्त करके सृष्टि की रचना करने वाला है। **पित्रोः** – वही सबका पिता और माता है कहा भी है **"त्वं हि नः पिता वसोः त्वं माता.......।"** अर्थात् हे प्रभो। आप ही हमारे पिता और आप ही हमारी माता हैं। अथवा **"द्यौष्पिता पृथिवी माता– द्यौ लोक पिता और पृथिवी हमारी माता है।" उपस्थे मदन्तम्** – आपकी ही गोद में, आपकी ही शरण में आनन्द की प्राप्ति है हे प्रभो। आप ही आनंन्द प्रदान करने वाले हैं। **तम् सत्यवाचनम्** – उसको, किसको ? जिस परमात्मा का वेद रूपी सनातन सत्य ज्ञान है, वेद ज्ञान है उस निर्भ्रान्त ज्ञान वाले ईश्वर की महिमा का, **रोदसी पिपृतम्** – द्यौ लोक से लेकर पृथिवी लोक तक प्रत्येक पदार्थ गुणगान कर रहा है।

सारा संसार उसकी अनन्त महिमा से प्रकाशमान हो रहा है। सभी पदार्थ नियमों में बंधे हुए उसी की आज्ञा का पालन कर रहे हैं, उसकी आज्ञा का कोई भी उल्लंघन नहीं कर सकता। उपनिषद् के शब्दों में **"भयात्तपति सूर्यः भयादिन्द्रश्च वायुश्च"** उसी के दण्ड भय से मानो सूर्य तप रहा है, वायु बह रहा है। सारे संसार में सर्वशक्तिमान अनन्त परमात्मा का साम्राज्य स्थापित है। हम सब भी उसी का गुणगान करें, स्तुति करें। जिससे हमारे हृदय में प्रभु के प्रति श्रद्धा के भाव जाग्रत हों और श्रद्धा से विधि पूर्वक सन्ध्या वन्दन, प्रार्थना उपासना, जाप आदि कर सकें। फिर हम ईश्वर की कृपा से शीघ्र ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को प्राप्त होवें जो मानव जीवन का लक्ष्य है। मानव जाति के परमोद्धारक योगीराज आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के शब्दों में **"हे ईश्वर दयानिधे भवत्कृपया अनेन जपोपासना आदि कर्मणा धर्मार्थकाम मोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।"** अतः हमें नित्य प्रति ईश्वरीय आज्ञा वेद का स्वाध्याय, चिन्तन, मनन करना अति आवश्यक है तभी हम धर्म के मर्म को समझ पायेंगें। इसी बात का सन्देश आर्य समाज अपने सार्वभौमिक सिद्धान्त, अर्थात तीसरे नियम के माध्यम से सबको देना चाहता है जिसे अपनाकर सब सुखी होवें, सब स्वस्थ होवें। इसी मंगल कामना के साथ लेखनी विराम लेती है। इति

– पं. सुरेश शास्त्री

महू (म. प्र.)

वेद क्या ?

विदन्ति–जानन्ति विद्यन्ते भवन्ति, विन्दन्ति विन्दन्ते लभन्ते, विन्दते विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः सर्वाः सत्यविद्या येर्येषु वा तथा विद्वान्सश्च भवन्ति ते "वेदाः"। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के वेदोत्पत्ति विषय के अन्तर्गत)

अर्थात् जिनके द्वारा मनुष्य सत्य विद्या को जानते हैं अथवा प्राप्त करते हैं अथवा विचारते हैं अथवा विद्वान होते हैं अथवा सत्यविद्या (ज्ञान) की प्राप्ति हेतु जिनमें प्रवृत्त होते हैं, उन्हीं का नाम वेद है।

वैदिक संस्कारों से प्रवेश

महू। अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिनाम दिवंगत पं. राजगुरू शर्मा वैदिक छात्रावास का 25 वॉ उत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर 18 बालकों को यज्ञोपवीत प्रदान कर छात्रावास में प्रवेश दिया गया। यज्ञोपवीत संस्कार श्री पं. रामलाल शास्त्री एवं श्री सुरेशचन्द शास्त्री ने सम्पन्न कराया।

प्राचीन गुरूकुल पद्धति पर संचालित छात्रावास में सनातन धर्म के अनुसार शिक्षा के अतिरिक्त नित्य संध्या, प्रार्थना, हवन, व्यायाम, आसन–प्राणायाम की शिक्षा दी जाती है।

कार्यक्रम में बालकों ने संस्कृत एवं अंग्रेजी संभाषण के पश्चात अद्‌भुद व्यायाम प्रदर्शन किया, जिसको सभी ने बहुत सराहा।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति थी। संचालन श्री श्रीधर गोस्वामी ने तथा आशीर्वचन श्री श्रीराम जायसवाल ने दिए।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा

2 से 10 अक्टूबर 2017

वर्ष 2006 से पुनः प्रारंभ हुई अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की श्रृंखला में इस वर्ष दिनांक 6, 7, 8 अक्टूबर 2017 को म्यांमा (बर्मा) में आयोजित किया गया है। इस अवसर पर म्यांमर, रंगून, इनले लेक, मांडले, पहाड़ी स्थान और मेम्यो के आकर्षक स्थानों का भ्रमण भी इच्छुक व्यक्ति कर सकेगें। यात्रा, वीजा, हवाई टिकट, बस व्यवस्था, भोजन, थ्री स्टार होटल आवास। मेडिकल बीमा 75 वर्ष तक की आयु तक कुल अनुमानित व्यय 75000/– रूपये है। (75 वर्ष से अधिक आयु के लिए मेडिकल बीमा पर अतिरिक्त व्यय देय होगा) जो महानुभाव इस सुविधा का लाभ उठाना चाहें वे तुरन्त अपना मूल पासपोर्ट, दो पासपोर्ट फोटो एवं "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम पर 15000/– का बैंक ड्राफ्ट/चैक 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली – 110001 के पते पर भेज देवें।

नोट : उपरोक्त यात्रा विवरण एवं व्यय राशि अनुमानित है। विस्तृत कार्यक्रम तैयार होने पर 10 प्रतिशत राशि घट बढ़ सकती है। 10 प्रतिशत से अधिक व्यय राशि बढ़ने पर जो श्रद्धालुजन महासम्मेलन में जाने में असमर्थता प्रकट करेंगे उनके द्वारा अग्रिम भेजी गई राशि को वापस लौटा दिया जाएगा। जो यात्रीगण कोलकाता से यात्रा करेंगे उनके लिए व्यय राशि 7500/– रूपये कम रहेगी।

व्यवस्थापक समिति – श्री अरूणप्रकाश वर्मा, श्री शिवकुमार मदान।

आवश्यक जानकारी हेतु – श्री एस. पी. सिंह (मो. 9540040324) पर सम्पर्क

सुरेशचन्द्र आर्य	प्रकाश आर्य	आर्य अनिल तनेजा
(प्रधान)	(सम्मेलन संयोजक एवं सभामन्त्री)	(कोषाध्यक्ष)
	मोबा. 9826655117	

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

– आर्य समाज

महू, इन्दौर, उज्जैन, रतलाम, भोपाल में यज्ञ प्रशिक्षण एवं प्रवचन

दिनांक 20 जुलाई से 30 जुलाई तक भगवान श्रीराम, योगीराज श्रीकृष्ण एवं हमारे अनेक ऋषि–मुनियों ने, धर्मग्रंथों ने सत्य सनातन वैदिक धर्म में यज्ञ को सभी श्रेष्ठ कर्मों में श्रेष्ठतम कर्म बताया है। इसीलिए यज्ञ हम सनातन धर्मियों में जन्म से मृत्यु पर्यन्त जुड़ा हुआ है। प्रत्येक शुभ कार्यों को प्रारंभ करने के पूर्व यज्ञ करने का विधान है। यह यज्ञ प्राणीमात्र के लिए विशेषकर मानव जाति के लिए कितना अधिक लाभदायक है यह हम आज तक नहीं जान सके हैं इसलिए यज्ञ को जीवन में विशेष महत्व नहीं दे पाये।

तो आइये, हमारी सनातन संस्कृति के इस पवित्र और सर्वोत्तम कर्म यज्ञ के संबंध में और सनातन धर्म के संबंध में सुनने हेतु शुभ अवसर हमें प्राप्त हो रहा है। इस हेतु पर्यावरण और रोगों का यज्ञ से निवारण कैसे हो ! यज्ञ कितना लाभकारी है ! यज्ञ से भौतिक और आध्यात्मिक किस प्रकार के अनमोल लाभ हैं, इस हेतु भारत के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. कमलनारायण आर्य, छत्तीसगढ़ से दिनांक 20–21 जुलाई 2017 को महू पधारे।

पुनः आगामी कार्यक्रम बनाकर प्रान्त में अन्य स्थानों पर भी इस प्रकार का आयोजन किया जाएगा।

आर्य युवा सम्मेलन

आगामी माह अगस्त की 20 तारीख को एक वृहद आर्य युवा सम्मेलन करने का निश्चय हुआ है। इस सम्मेलन में 50 वर्ष की आयु तक के आर्य युवक–युवतियां भाग ले सकेंगें। कार्यक्रम 1 दिवसीय है, जिसमें "आर्य समाज और युवा शक्ति" विषय पर विचार विमर्श एवं भावी योजना निर्मित की जावेगी। यह आयोजन उज्जैन अथवा इन्दौर में आयोजित है।

सभी आर्यजन इसमें अपना सहयोग प्रदान करें तथा प्रत्येक आर्य परिवार से इसमें भाग लेने हेतु नवयुवकों को प्रेरित करें।

कृपया अपने नाम, पता, सम्पर्क हेतु मोबाईल या टेलिफोन के नम्बर शीघ्र भेजें।

समीर गांधी

संयोजक : युवा संगठन

प्रचार कार्यक्रम

दिनांक 14/5/2017 रविवार ग्राम अवन्तिपुर बड़ोदिया में श्री योगेन्द्र जी पटेल के यहाँ पारीवारिक यज्ञ रखा गया। जिसमें आर्य समाज के व अन्य विचार धारा वाले अनेक व्यक्ति व सक्रिय कार्यकर्ता सम्मिलित हुये। यज्ञ का समापन श्री बाबूलाल जी सोनी जिला प्रभारी सिहोर द्वारा किया गया। यज्ञ के उपरान्त मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के मन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य, महू के मार्गदर्शन में श्री बाबूलाल जी सोनी जिला प्रभारी जिला सिहोर तथा श्री भारत सिंह ठाकुर जिला सहप्रभारी जिला सिहोर द्वारा ग्राम अवन्तिपुर बड़ोदिया में एक आर्य समाज की स्थापना की गई, जिसमें 15 सदस्यों ने आर्य समाज की सदस्यता ग्रहण कर साप्ताहिक यज्ञ करने का सुसंकल्प लिया गया। इस कार्यवाही में आर्य समाज के प्रधान श्री मांगीलालजी ठाकुर तथा ग्राम हरनावदा आर्य समाज के लाखनसिंहजी भाटी तह. जावरा जिला सिहोर भी उपस्थित थे।

इसी अवसर पर 10 से 13 मई तक भानुप्रकाशजी बरेली का कार्यक्रम भी हुआ।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए।

विशेष—बार—बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो-सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना ■ पढ़ाना और सुनना■सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य
...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।
महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥
सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

※ आर्य समाज के दस नियम ※

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - **प्रकाश आर्य, महू**